इस साल भूदान में गणसेवकत्व की शोध हुई।

.... में कई कार्यकर्ता इकट्ठे होकर लोगों के पास पहुँचकर दान माँगते हैं। यह उनका व्यापक प्रयोग शुरू हुआ है, क्योंकि ईश्वर की कृपा से नये लोगों को मौका देने के लिए वहाँ पुराने नेता उसमें शामिल नहीं है। मतलब बने-बनाये नेता काम में नहीं आते हैं और नये नेता एकदम बनते नहीं हैं, तो छोटे-छोटे कार्यकर्ता काम करते हैं तो उन लोगों ने सामूहिक तौर पर काम करना शुरू किया है। गणसेवकत्व बड़ा सफल होता है, ऐसा अनुभव आया है। वहाँ के जो कार्यकर्ता हमसे मिले थे, हमने देखा कि उनका आत्मविश्वास खूब बढ़ा है। इस तरह से जनशक्ति के जरिये काम हो सकते हैं, व्यक्ति के नेतृत्व के अभाव में भी गणसेवकत्व सफल हो सकता है, यह नये साल में सिद्ध हुआ।

—विनोबा

१ सामूहिक पदयात्राओं की आवश्यकता

हिंदुस्तान में भूदान यज्ञ को आरंभ हुए पांच वर्ष से अधि हो गए हैं। अब देश में हजार-दो-हजार कार्यकर्ता पूरा स देकर काम कर रहे हैं। कार्यकर्ता उत्साह से आंदोलन में आते हैं। चांडिल में, बोधगया में या पुरी में आवाहन हुआ, विनोबाजी का या जयप्रकाशजी का भाषण सुना, भूदान-यज्ञ का अच्छा साहित्य पढ़ा और इसके फलस्वरुप भूदान-यज्ञ में काम करने की इच्छा हुई। काम भी उत्साह से कुछ दिन किया। लेकिन काम में प्रगति नहीं हो रही थी। जयप्रकाशजी, शंकर-रावजी, संत तुकडोजी आदि महानुभावों के दौरे करवाए। उससे काम में कुछ गति आई। लेकिन ज्योंही उनके दौरे समाप्त हुए, त्योंही साधारण कार्यकर्ता और गहरी निराशा में डूब जाता था। भूदान प्राप्त करना केवल बड़े आदमी का ही काम है ऐसी प्रतिक्रिया उसके दिलपर होती थी। राजनैतिक पार्टी के लोगों से नगण्य-सी मदद मिलती थी। कभी-कभी विरोध भी होता था। तहसीलों में घूमते-घूमते सप्ताह पर सप्ताह एवं मास पर मास निकल जाते थे। लेकिन भूमिप्राप्ति में, कार्यकर्ताओं को जुटाने में कोई खास प्रगति नहीं होती थी। तब कार्यकर्ता निराश होते थे। तब उनकी समझ में नही आता था कि क्या किया जाय ?

बार-बार निष्फल प्रयत्न करने वाला कार्यकर्ता निराशा की खाई मे तो डूब जाता ही है, साथ ही साथ उससे भूदान के

कामको भी ठेंस पहुंचती है। कार्यकर्ता आनेपर भूमिदान-संपत्तिदान दिये बगैर उन्हें टालने की लोगों को आदत लगती है। सामान्य जनता इस मार्गपर अविश्वास भी करने लगती है। नये कार्यकर्ता आने की हिम्मत नही करते हैं और पुराने कार्यकर्ता भी धीरे-धीरे काम छोड़ देते हैं। निष्फल काम करने से इस तरह हालत दिन-ब-दिन बदतर होती चली जाती है। कार्यकर्ताओं में ग्लानि आकर वे जड़ बन जाते हैं। ऐसे अधूरे निष्फल प्रयत्न करने के बजाय कुछ न करना ही अच्छा है।

ऐसी हालत में मध्यप्रदेश के कार्यकर्ता थे। अन्य स्थानों के भी रहे होंगे। तब १९५३ के अगस्त में मध्यप्रदेश के कार्यकर्ताओं ने सोचा कि हम अकेले-अकेले काम नही कर सकते। हम सब मिलकर काम करेंगे। उसके बाद तो १९५४, ५५ में सामूहिक छुटपुट प्रयोग चले। अक्तूबर १९५५ से लगातार सामूहिक पदयात्राएँ हुओं नतीजे आश्चर्यजनक आए हैं।

सामूहिक पदयात्रा वरदान है

तबसे मध्यप्रदेश में सामूहिक पदयात्रा की कल्पना चल पड़ी है। सामूहिक पदयात्रा के लिये २०-२५ टोलियों में बटकर कार्यकर्ता निकल पड़ते हैं। इस कार्यक्रम से कार्यकर्ताओं में नई जान आई है। अकेलेपन की निराशा की जगह अेक नया अुत्साह, आत्मविश्वास और भाईचारा बढ़ा है। सालभर में थोड़ा 'समय देने वाले कार्यकर्ताओं के समय और शक्ति का पूरा लाभ मिल जाता है। भूदान के काम को जन-आन्दोलन का रूप प्राप्त होता है, जनता में आन्दोलन के प्रति श्रद्धा बढ़ती है। और एक अैसा वातावरण बनता है कि आन्दोलन का उपहास करने

वाले गम्भीरतापूर्वक सोचने लगते है। इस सामूहिक पदयात्रा के कारण गांव-गाव मे भूदान का सन्देश पहुचता है, साहित्य विकता है, भूदान-पत्र के ग्राहक बनते है और अच्छी तादाद में भूमि व सम्पत्ति के दानपत्र मिलते है। इन सबके अलावा एक अच्छा कार्यकर्ता वर्ग तैयार हो जाता है। उनकी सगठन-शक्ति और बौद्धिक योग्यता बढ़ती है और आगे के काम की जिम्मेदारी उठाने के लिये उनको आगे आने का उत्साह मिलता है। तो यह सामूहिक पदयात्रा क्या है? इस तंत्र को हम जाने। क्योंकि यह एक नई चीज़ है। इसका तत्र धीरे-धीरे विकसित हो रहा है। यह बात हमारे साथी श्री. पाटनकर को सूझी, श्री चंद्रसिह नाईक ने लगातार प्रयत्न से इसकी संभावनाओ को प्रकट किया, श्री. आर. के पाटील, श्री बसंतराव वोबटकर, श्री. जसवतराय आदि अनेकानेक साथियो ने इसके भिन्न-भिन्न अगो को विकसित किया। आज इस प्रयत्न के फलस्वरुप मध्यप्रदेश में उत्साह की लहर आगई है। सब कार्यकर्ता इस काम में भिड़ गये है। मध्यप्रदेश में गत ८ माह से नागपुर विभाग के १५ कार्यकर्ताओं ने सामूहिक अखड यात्रा की है। इसलिए इसके तत्र के तफसील मे हम जाये।

२ सामूहिक पदयात्रा का तंत्र

सामूहिक पदयात्रा के लाभ हासिल करने के लिये हमे बहुत बडे पैमाने पर पूर्वतैयारी की आवश्यकता होती है। जो दीर्घकाल तक कार्यकर्ताओ की निष्ठा, श्रम एव कुशलता से ही सभव हो सकती है। इस प्रकार की पदयात्राओ का कार्यक्रम कम-से-कम एक तहसील याने ३०० गावो में होना चाहिये।

जनसेवकों का सहकार

आज जनसेवक भिन्न-भिन्न पक्ष, पथ मे बट गये है लेकिन सब भूदान के लिये अनुकूल है। उन सबसे व्यक्तिगत तौर पर अलग-अलग मिलकर उनको एक जगह लाना चाहिये। उन सबका इस काम मे सहयोग प्राप्त करना चाहिये।

पदयात्रा सगठन की भूमिका निष्पक्ष और निर्वैरता की होनी चाहिये। भूदान आदोलन पर उसकी अनन्य श्रद्धा हो। सब पक्ष-पथो के बारे में उसके दिल मे समान भाव हो। भिन्न-भिन्न पक्षीय कार्यकर्ताओ के प्रति आदर और उनके स्वाभिमान की रक्षा करने की क्षमता उनम होनी चाहिये तभी सबका सहकार मिलेगा। ऐसे सज्जनो की एक बैठक आमन्त्रित करके उसमे निम्न बाते तय करनी चाहिये।

१ पदयात्रा का समय, टोलिया निकालने का समय कौनसा रहे यह पहले तय किया जाये। इसके लिये तीन बाते ध्यान में रखनी चाहिये --

(क) पदयात्रा की सफलता जिनपर निर्भर है, ऐसे पाच-सात कार्यकर्ताओ का व्यक्तिगत रूप से वह समय अधिक अनुकूल हो।

(ख) सस्थाओ के अन्तरगत चुनाव या सभा सम्मेलन होते है, कुछ बाहरी चुनाव भी होते है, पदयात्राओ के लिये ऐसे समय का चुनाव नही करना चाहिये।

(ग) विवाह शादियो के दिन, बोने या फसल काटने का समय, दिवाली, दशहरा इत्यादि, त्यौहार या मेले उन दिनो में न हो।

यदि इन बातो का ध्यान नही रखा गया, तो सामूहिक पदयात्रा के लिये, पर्याप्त कार्यकर्ता नही मिलेगे, और जब उन गावो मे पहुचेगे तो लोग अपने ही कार्यक्रमो में व्यस्त रहेगे। और पदयात्रा का हमारा सारा उद्देश्य असफल हो जायेगा। इस दिशा में कार्यकर्ताओ का सूक्ष्म अध्ययन होना चाहिये और अनुकूल समय का फायदा उठाने की कुशलता उनमे होनी चाहिये।

(२) **नेताओ के निमन्त्रण**—सामूहिक पदयात्रा की पूर्व-तैयारी, शिविर सचालन, पदयात्रा का उद्घाटन और अन्तिम समारोह के लिये नेताओ की जरूरत होती है। बैठक म सर्व सम्मति से नेताओ के नाम पसन्द करने चाहिये।

(३) **काम का बटवारा**—कार्यकर्ताओ की इस बैठक में आपस में काम का बटवारा करक हरेक के ऊपर जिम्मेदारी डालनी चाहिये। काम का स्वरूप साधारणतया निम्न प्रकार का होता है—

(क) **कार्यकर्ता प्राप्त करना**—२५ टोलिया निकालने के लिये कम-से-कम पचास पचहत्तर कार्यकर्ता होने चाहिये। इसके

लिऐ विभिन्न पक्षवालो से मिलकर उनके कार्यालय से पदयात्रा में हिस्सा लेने के किये कार्यकर्ताओ को अनुरोध-पत्र लिखवाने चाहिये। सयोजक प्रदेश भूदान समिति की ओर से तहसील भर के सब कार्यकर्ताओ को पदयात्रा मे हिस्सा लेने के लिये एक परिपत्र द्वारा आवाहन किया जाये (परिशिष्ठ न जनपद, नगरपालिका, हाईस्कूल तथा कालेज के अधिकारियो से मिलकर उनका सहयोग इस काम मे प्राप्त किया जाये, स्कूलों मे सभाओ का आयोजन कर अध्यापको व छात्रो को पदयात्रा मे भाग लेने के लिये उत्साहित करना चाहिये, इसके लिये प्रभावशाली व्यक्ति को साथ ले जाना ठीक रहता है।

(ख) **जनता से सम्पर्क**--पदयात्रा के पूर्व बड़े-बडे और महत्वपूर्ण गावो में पहुचना चाहिये, वहाँ के जमीदार, बडे-बडे किसान, श्रीमान, वकील, डाक्टर तथा बहनो आदि की छोटी-छोटी सभाये लेनी चाहिये तथा उनको विचार समझाना चाहिये और दानपत्र प्राप्त करने की कोशिश करनी चाहिये। जिन्होंने जमीन दी है उन्हे साथ लेकर अन्य लोगो के पास पहुचना चाहिये। किस तहसील में कौन विरोधी है इसकी पूरी जाच कर लेनी चाहिये ताकि पदयात्रा के समय उसका ध्यान रखकर योग्य व्यक्ति वहा भेजा जा सके। वातावरण बनाने के लिये अनुकूल गावों के दस-बारह केन्द्र चुनकर वहा प्रत्यक्ष दानपत्र इकट्ठे करने चाहिये ताकि धीरे-धीरे तहसील में अनुकूल वातावरण तैयार हो जावे।

(ग) **प्रचार कार्य**--ठीक ढंग से प्रचार कार्य करनेपर अनुकूल वातावरण बनने में सहायता मिलती है। इसके लिये पूर्व-

तैयारी करने वाले कार्यकर्ताओ के पास भूदान का पूरा साहित्य तथा पेम्फलेटस् होने चाहिये। भूदान समिति के सयोजक जनता के नाम एक निवेदन-पत्र प्रकाशित कर भूदान व सम्पत्ति दान मे हिस्सा लेने के लिये जनता को प्रोत्साहित करे। बडे-बडे नेता भूदान के बारे मे क्या कहते है इसका भी एक छोटा पेम्फलेट हो। गरीब भी दान क्यो दे, जमीन का बटवारा कैसे किया जाता है, इसके भी परचे छपवा कर देहातो मे बाटने चाहिये' (परिशिष्ठ १, २, ३, ४) तहसील के बाजारो के दिन भी यह काम आसानी से किया जा सकता है। गाव-गाव में दीवारो पर भूदान के घोष वाक्य लिखने चाहिये, स्कूल मे जाकर बच्चो को भूदान-गीत पढाने चाहिये और जिस गाव मे उत्साही कार्यकर्ता या अध्यापक हो वहा भूदान-फेरी निकालनी चाहिये, भूदान-पत्रो के ग्राहक बनाने चाहिये और कुछ अक मुफ्त भी देने चाहिये। कलापथक का देहात में खूब असर होता है। इस प्रकार के नाटक का भी आयोजन करना चाहिये। इस तरह अपनी तहसील मे टोलिया निकलने वाली है, भूदान-यज्ञ का काम शुरू होने वाला है इसकी जानकारी चारो ओर फैल जानी चाहिये।

(घ) **खर्च की व्यवस्था**—पूर्वतैयारी के लिये तहसील भर मे घूमना, शिविर लेना, पद यात्रा के लिये बाहर से नेता तथा कार्यकर्ताओं को बुलाना, कलापथक, पेम्फलेट, उद्घाटन तथा अन्य समारोहो में तहसील मे कम-से-कम एक हजार रुपये का खर्चा आ सकता है। इसके लिये बाहर से जो नेता या कार्यकर्ता आते है उनका खर्च (साहित्य बिक्री) कमीशन या केन्द्रीय सगठन से प्राप्त किया जाये, मोटर वालो से मुफ्त टिकिटो का इन्तजाम हो सकता

है। शिविर भोजन आदि का खर्च स्थानीय जनता से अनाज और नक़द रुपयों के रूप में प्राप्त किया जा सकता है। इसी प्रकार पदयात्रा का उद्‌घाटन और आखिरी दिन का समारोह जनता के सहयोग से सम्पन्न किया जाना चाहिये, बाहर के पैसों के बल पर काम न किया जाय।

बाहरी कार्यकर्ताओं का सहयोग—२०,२५ टोलियों के लिये एक तहसील में ही सुयोग्य कार्यकर्ता मिलना जरा कठिन होता है। इसलिये तहसील के बाहर के कार्यकर्ताओं को बुलाना पड़ता है। जिन कार्यकर्ताओं को बाहर से बुलाना हो उनको कम-से-कम २१ दिन पूर्व इसकी सूचना देनी चाहिये। पूर्वतैयारी के लिये कम-से-कम ५–६ कार्यकर्ता पूरा समय देने वाले और १५ दिन तक सतत घूमने वाले होने चाहिये।

सावधानी

पूर्वतैयारी करते समय हमें दो बातें विशेष ध्यान में रखनी चाहियें। अनुकूल लोगों की शक्ति का पूरा लाभ उठाना चाहिये। और जो लोग विरोधी हैं उनका कम-से-कम असर हमारे काम पर पड़े। जो विरोध करते हैं या उदासीन रहते हैं उन्हें समझानें की पूरी कोशिश की जाय लेकिन उनको अनुकूल बनाने के लालच में ही हम सब शक्ति और समय बरबाद न कर दें इसका भी ध्यान रखना चाहिये।

पूर्वतैयारी कि कसौटियाँ

(१) हर एक टोली में घमने के लिये २।४ याने १०० कार्यकर्ताओं का आश्वासन मिला हो।

(२) खर्च का इंतजाम हो गया हो।

(३) देहातों में सब जगह भूदान की चर्चा लोग कर रहे हों।

(४) कम-से-कम १०० भूदान और १०० संपत्तिदान-पत्र प्राप्त हुये हों।

शिविर

पदयात्रा के पूर्व कम-से-कम दो दिन के शिविर में भूदान के राजनैतिक, आध्यात्मिक एवं सामाजिक सभी पहलुओं को लेकर विभिन्न वक्ताओं के अध्ययनपूर्ण भाषण हों। वक्ताओं को पहले से उनके विषय (परिशिष्ठ ५ देखें) के बारे में सूचना कर देनी चाहिये। शिविर की बौद्धिक चर्चा के कारण नये कार्यकर्ता अच्छे प्रचारक बन जायेंगे। उन्हे व्यावहारिक सूचना भी दें (परिशिष्ठ ६)।

टोलियों की छटनी

शिविर में आने वाले कार्यकर्ताओं और टोली नायकों की सख्या और योग्यता के अनुसार पदयात्रा के क्षेत्र के देहातों को टोलियों मे बांट लेना चाहिये। एक टोली बड़े देहात मे एक दिन काम करेगी और छोटे गांव एक दिन में दो, सबेरे एक तो शाम को दूसरा। इस प्रकार सप्ताह मे कम-से-कम दस स्थानों पर एक टोली घूम सकेगी। प्रत्येक टोली में एक वक्ता और एक उन गावों की जानकारी रखने वाला कार्यकर्ता हो। इसके अलावा एक-एक गाने वाला भी मिल जायें तो ठीक रहेगा। टोली नायक के पास एक आदर्श भाषण की प्रति देनी चाहिये। इससे नये कायकर्ता वह भाषण देहातिओं को पढ़कर सुनायेगे। (परिशिष्ठ ७)। टोली नायक को जिन गावों में वह टोली घूमने वाली है, उसका एक नक्शा देना

चाहिये, तथा उसको उन देहातो की पूरी जानकारी से वाकिफ करा देना चाहिये, ताकि वह यह जान सके कि कौन अनुकूल है और कौन प्रतिकूल है। टोली नायक को सबसे अनुकूल गाव से अपना काम शुरू करना चाहिये। टोली नायक का चुनाव कुशलता पूर्वक किया जाय। जहा जिसका अधिक अुपयोग हो वहा अुसकी योजना करे। बडे नेताओ के लिये कुछ अलग कार्यक्रम बनाये ताकि अधिक-से-अधिक दानपत्र मिल सके, कार्यकर्ता तैयार हो सके और अच्छा प्रचार हो।

आशीर्वचन

टोलिया जब घूमने के लिये निकले अुस वक्त अेक अच्छा खासा समारोह आयोजित किया जाय। स्थानीय लोगो की अेक आम सभा बुलाओ जाय वहा किसी बडे नेता का भाषण हो। फिर सभा मे पदयात्रियो का कुमकुम-तिलक लगा कर स्वागत किया जाय। नेता द्वारा हरअेक टोली नायक को अेक थैली भेंट की जाय जिसमे भूदान तथा सर्वोदय साहित्य, भूदान, सम्पत्ति-दान, जीवनदान अेव साधनदान के दानपत्र हो। भूदान-पत्रो के नमूने के अंक, रसीद बुके तथा प्रचार के लिये छपे हुये पेम्फलेट आदि हो। अन्त मे नेता टोलियो की सफलता के लिये शुभाशीर्वाद प्रदान कर कार्यकर्ताओ को विदा करे।

पदयात्रा

इसके बाद टोलिया अपने नियोजित क्षेत्र में प्रवेश करेगी। गाव में पहुचते ही भूदान-फेरी निकालकर लोगो को सभा के समय तथा स्थान की सूचना दी जाय। आम सभा में भूदान-गीत तथा भाषणो द्वारा लोगो को विचार समझाया जाय तथा दान

मांगी जाय। जिनसे दान मिला अुनको पहुंच देना चाहिये (परिशिष्ठ ८ देखें) साहित्य बिक्री अन्त मे हो। फिर गांव में घर-घर जाकर लोगों को समझा कर भूदान-प्राप्ति का प्रयत्न करना, साहित्य बेचना, भूदान-पत्रों के ग्राहक बनाना, मजदूरों की हालत देखना तथा स्थानीय कार्यकर्ताओं को अुस गांव का भूदान का काम चलाने के लिये तैयार करने का कार्य-क्रम रहेगा। गांव में रहने वाले कार्यकर्ताओं को टोली के साथ दूसरे गांव में लेने की कोशिश हो और गांववालों को समारोह में भाग लेने के लिये निमंत्रित किया जाय। हर गांव में क्या काम किया इसका पूरा बिवरण टोली नायक को लिखकर रखना चाहिये।

पदयात्रा समाप्ति समारोह

बाद में टोलियों के कार्यकर्ता अन्तिम दिन फिर नियत समय पर इकट्ठे हों। टोली नायक अपना अहवाल एक विवरणपत्र पर भरकर संगटक को दें (परिशिष्ठ ९ देखें)। पदयात्राओं की दौरान में गावों में इस काम का दायित्व लेने की दृष्टि से जिन लोगों को तैयार किया गया हो वे भी स समारोह में भाग लें। सब एक साथ बैठकर अपने-अपने अनुभव सुनायें। पदयात्रा में जो कठिनाइयां या सवाल पैदा हुये हों उनपर चर्चा की जाये।

आगे के काम का संकल्प

सामूहिक पदयात्रा कार्यक्रम के बाद कार्यकर्ताओं में शिथि-लता आने का डर बना रहता है। इसलिये हमारे मनमें यह स्पष्ट कल्पना होनी चाहिये कि सामूहिक पदयात्रा का कार्यक्रम काम को गति देने का कार्यक्रम है। इस दृष्टि से समाप्ति समा-

रोह के दिन जो बैठक चले उसमे आगे के काम की योजना तय करनी चाहिये और उस क्षेत्र के किसी एक भाई पर काम की जिम्मेदारी डालनी चाहिये। बैठक मे भूमिप्राप्ति, वितरण, साहित्य बिक्री, कार्यकर्ता तैयार करने तथा भूदान पत्रों के ग्राहक बनाने आदि के संकल्प होने चाहियें। जीवनदान के लिये कार्यकर्ताओं को आवाहन करने से जीवनदानी मिल जाते है।

अनुभव से यह पाया गया है कि सामूहिक पदयात्रा के कारण सब गावो का एक नक्शा सामने आ जाता है। कार्यकर्ताओं की परख हो जाती है। और उस आधार पर जो आगे की योजना बनती है वह परिपूर्ण होती है।

आम सभा

इसके बाद इसी दिन एक आमसभा का आयोजन कर सप्ताह भर में जो काम हुआ है उसकी जानकारी लोगों को करानी चाहिये पदयात्रा के लिए जो खर्च हुआ वह सारा वहां पेश करना चाहिए और आगे के काम की रूपरेखा समझानी चाहिये और जनता तथा कार्यकर्ताओं को उसमें सहयोग देने का आवाहन करने के बाद भूदान गीतों और जयघोषों के साथ सभा का विसर्जन करना चाहिये।

★

३ मध्यप्रदेश में सामूहिक पदयात्रा की प्रगति

सारे देश मे पुरी सम्मेलन के बाद बिहार को छोडकर भूमिप्राप्ति बहुत बडे तादाद में कही हर माह हो रही होगी तो वह मध्यप्रदेश में हो रही है। जहांका आंदोलन आगे बढा हुआ माना जाता है ऐसे ही प्रदेशों के आंकड़े निम्न है :—

	ता. ३१-३-५५	३०-४-५६	वृद्धि
हैदराबाद	१०६०००	१०९०००	३०००
उत्तरप्रदेश	५४२०००	५,८१,०००	३९०००
उत्कल	१४१०००	२,५५,०००	१,१४०००[स्वयं विनोबाजी की पदयात्रा थी।]
मध्यप्रदेश	९९०००	१,६०,०००	६१०००
गुजरात	३७०००	४४,०००	७०००
केरल	२८०००	२९०००	१०००

सामूहिक पदयात्रा के पहलें हमारे प्रांत कि स्थिति क्या थी ? कई तहसीलों में एवं जिलों में भूदान-प्राप्ति शून्य सी-थी। निम्न आंकडों से इसका पता चलेगा। जहां-जहां बड़े नेताओं का दौरा हुआ वहां कुछ प्रगति दीखेगी, जैसे :—

जिला	अक्तु. ५४ में भूमिप्राप्ति	अक्तु. ५५ में भूमिप्राप्ति	अभिप्राय
१. भंडारा	९६६	१२५४३	संत तुकडोजी के दौरे में १४००० एकड़ मिली।

२ वर्धा	७१९३	८२६५	जयप्रकाशजी एव सत तुकडोजी के दौरे मे ५०० एकड मिली।
३ चादा	१२३७	३०६७	तुकडोजी महाराज के दौरे मे मिली।

जहा बड नेताओ का दौरा नही हुआ है वहा की हालत निराशाजनक थी।

कई तहसीले एव जिले ऐसे है जहा सालभर मे कोई प्रगति नही हुई --

	अक्तूबर ५४	अक्तूबर ५५
नागपुर तहसील	६३७ अेकड	८१०
रामटेक ,,	१३४९ ,,	१५४६
सावनेर ,,	५११ ,,	५५६
अचलपुर ,,	११६ ,,	१९१
चिखली ,,	२४ ,,	२४
मलकापुर ,,	११८ ,,	१३४

सारे मध्यप्रदेश मे ६५०००--पुरी समेलन तक ९९००० वृद्धि ३४००० मध्यप्रदेश मे सारे प्रदेश में सामूहिक पदयात्राओं का तंत्र पुरी से शुरू हुआ और जोर-शोर से अक्तु. ५५ से शुरू हुआ। इसी कारण १ साल में यह आकडा ९९००० से १,६०,००० तक पहुचा। इस वर्ष सत तुकडोजी महाराज, जयप्रकाशजी, शकरराव देव आदि किसी भी बडे नेता का भूमिप्राप्ति के लिए दौरा मध्यप्रदेश में नही हुआ। प्रात के बडे नेताओ ने हो १९५४ में जितना समय भूदानयज्ञ के लिए दिया था उतना भी नहीं दिया। पर सारी जमीन छोटे-छोटे कार्यकर्ताओ ने प्राप्त की है।

सामूहिक पदयात्रा के कारण मिली जमीन

नाम	अक्तु० ५५ (प्राप्ति अंक)	मार्च ५६ (प्राप्ति अंक)
नागपुर जिला	५२१६	६८३६
भंडारा ,,	२५४३	३६००
वर्धा ,,	८२६५	१२५००
नागपुर तहसील	७१०	९५९
रामटेक ,,	१५४६	२३२०
सावनेर ,,	५५६	११५३
हिंगणघाट ,,	९६६	२१६३
आर्वी ,,	२२३९	५३००
ब्रह्मपुरी ,,	२८१	८००
यवतमाल ,,	२८०००	३९०००
जबलपुर जिला	१२०००	२७०००

अब यह सामूहिक पदयात्रा का सिलसिला मध्यप्रदेश के कोने-कोने में चल पड़ा है। अब आगे की प्रगति और भी ठोस होगी ऐसी सबको आशा बंध गई है।

★

४ कार्यकर्ताओं से

शिविर मे कार्यकर्ता आनेपर उन्हे भूदान के सब पहलुओं से परिचित कराया जाय। इस शिविर का एक अभ्यासक्रम ही रखा जाय। उसके साथ सबको गाने की तालीम दी जाय। हरएक कार्यकर्ता को भूदान के गाने शिविर मे सिखाने चाहिये। इसलिये शिविर मे सामुहिक भूदान-गीत गाने का अभ्यास कम-से-कम दो घटों का रखा जाय। इससे कार्यकर्ताओं की उमंग बढ़ती है और वातावरण भी उत्साह से भर जाता है। वैसे ही नये कार्यकर्ता को भाषण देने की तालीम दी जाय। भाषण मे कौन-सी बातें आनी चाहिये यह हम उन्हें समझावें। नये लोगों के भाषण भी करवाए जाय। इसके लिये एक स्टैंडर्ड भाषण हमारे पास हो (परिशिष्ठ ८ देखे)। उसके आधार पर देहात मे जाकर नये कार्यकर्ता भाषण देगे। शिविर मे थोड़ी-सी तालीम मिलने के कारण और देहात में भाषण देने का अभ्यास बढने के कारण कार्यकर्ता जल्द ही अच्छा भाषण देने लगता है।

ऐसे जो कार्यकर्ता प्रचार के लिये जायेंगे उनको शिविर के सचालक भाई के द्वारा निम्नलिखित बातों से परिचित कराया जाना निहायत जरूरी है। भूदान का तत्वज्ञान तो समझा, लेकिन उसपर अमल करने का तरीका भी कार्यकर्ता को सधना चाहिये। ज्ञान और कला मिलाकर पूर्णता आती है।

निम्न बातो पर ख्याल देना निहायत जरूरी है ।--

सबके लिये समभाव

भूदान आदोलन किसी एक पक्ष का आदोलन नही है । भिन्न-भिन्न राजनैतिक संस्थाओ मे काम करने वाले, भिन्न-भिन्न धर्म को मानने वाले, भिन्न-भिन्न सेवा के क्षेत्र मे काम करने वाले इस आदोलन मे हिस्सा ले सकते है। यह सबका अपना माना गया आदोलन है । सबका यहा स्वागत है । लेकिन यहा आनेपर अुन्हे अपना-अपना कुछ लेबल भूल जाना चाहिये । हम केवल मानवमात्र है और मानवता की सेवा करने के लिये आये है ऐसा वे समझें ।

भूदान का मच सब पक्षभेदवालो को आपस में प्रेम से मिलने का एक पवित्र स्थान है । उसे हम पक्षगत प्रचार से गदा न करे। इससे वे आत्मस्तुति और परनिंदा से बचेंगे। सीमित दायरे के बाहर आकर जनता से एकरूप हो सकेंगे। सबके विश्वासपात्र बनकर सबका सहयोग प्राप्त कर सकेंगे । इस तरह अहकार छूटने से-भूदानमय होने से-वे अजातशत्रु बनेंगे ।

२. कार्यकर्ता के मन मे आस्तिक भावना होना निहायत जरूरी है । हरएक मनुष्य-मात्र मे सद्भावना होती ही है ऐसा विश्वास दिल मे रखकर कार्यकर्ता दान के लिये आवाहन कार्यकर्ता के दिल में जितनी लगन होगी, उसका चरित्र जितना उज्ज्वल होगा और लोगो के साथ घुलमिल जाने की शक्ति जितनी ज्यादा होगी उतना ही वह अपने कार्य मे यशस्वी होगा । आत्मविश्वास के साथ वह काम करे। सामने वाले के बारे में विश्वास और अपनी बात की सचाइ मे-सामर्थ्य मे-विश्वास यह सफल कार्यकता का सर्वप्रथम लक्षण है ।

३. हर गांव में सभा हो

सर्वोदय की भावना लोगो मे फैलानी है। जमीन का चदा इकठ्ठा करना नही है। आम सभा विचार-प्रचार का सर्वोत्तम साधन है। अनपढ होने के कारण आम लोग किताबे नही पढ सकते है। आम सभा से ज्यादह-से-ज्यादह लोगो के पास थोडी अवधि मे पूरा विचार जाता है। सभा से गरीबो मे जागृति पैदा होती है और भूमि वाले भाई के दिल को छूने का मौका मिलता है। अन्याय को आमसभा में प्रगट करने से पीडित लोगो की हिम्मत बढती है। अन्याय के खिलाफ एक नैतिक शक्ति खडी होती है। इसलिए कुछ श्रीमान् एव राजनीतिक कार्यकर्ता चाहते है कि गाव मे सभा न हो। लोग जितने दिन तक अधेरे मे, अज्ञान मे रहेगे उतना इनका सधता है। वे कहते है हम आपको जमीन देगे, लेकिन हमारे गाव में सभा मत लीजिये। इससे लोगो मे जागृति पैदा होगी। ऐसे समय जो कार्यकर्ता सभा नही लेते है और जमीन मिलने से ही काम हो गया ऐसा मानते है वे रिश्वत लेते है। हमको शोषणरहित समाज का आदर्श जनता के सामने स्पष्ट शब्दो में रखना चाहिये। हमारा मुख्य शस्त्र विचार-प्रचार है। विचार समझे बिना मिली हुई जमीन किस काम की ?

गाव में गुटबदियां होती है। स्पृश्यास्पृश्य भेद-भावना होती है। इसलिए सभा ऐसी सार्वजनिक जगह लेनी चाहिये जहां सब जाति के लोग, सब गाव वाले स्त्री-पुरुष बिना सकोच आ सके। सभा बुलाने का काम खुद कार्यकर्ता को करना चाहिये। गाव के मुखिया के भरोसे सभा नही छोड़नी चाहिये। गाव के स्कूल मे जाकर विद्यार्थिओ को गीत सिखाकर, नागरिको की ओर

'विद्यार्थीओ की फेरी निकालकर सभा की डुग्गी भूदान कार्यकर्ता खुद द । ग्रामसभा शुरु होने के पहले ही गाव के जो अनुकूल और सज्जन आदमी होगे--भले ही वे गरीब हो--उनसे कार्यकर्ता मिले और उनको दान देने के लिये प्रवृत्त करे। ग्रामसभा मे यदि गाव का श्रीमान् या मुखिया दान नही देता है तो गरीब लोग हिचकिचाते है, डरते है। इसलिये पहलेसे ही यदि एसे दाता तैयार करके रखें तो सभा मे आवाहन होने पर अन्य अनुकूल लोग--मुखिया या श्रीमान् के न देने पर भी—अपना दान जाहीर करते है। और फिर दूसरे लोग भी दान देने की हिम्मत करते है।

सभा को शुरुआत गाने से हो। लोगो को विचार समझाने के बाद भूदान के पावन प्रसग सुनाने चाहिये। उस इलाके के, उनके पडोसी लोगो के गाव वालो के--दान के प्रसग उनके सामने रखने से वे ज्यादा प्रभावित होते हैं और आवाहन करने पर विश्वासपूर्वक दान देते है। इस तरह कार्य करने से हरएक सभा म दान मिल ही जाता है। यदि सभा सफल रही तो दान मिलता है और गाव मे खूब अच्छा काम होता है। सभा के अंत में हम गीत गाये और घोष करे। बाद में साहित्य बिक्री करनी चाहिये।

(४) सभा में दान मागनेपर गाव का काम पूरा नही होता है। सभा मे विचार समझने पर दान देने की कईओ की इच्छा होती है। लेकिन उनको कुटुब के अन्य सदस्यो की सम्मति की जरूरत होती है। कई व्यावहारिक दिक्कते उनके सामने आती है। कोई सकोच के कारण अपनी शका ग्रामसभा के सामने नही रखना चाहते है, कोई गुप्त दान करना चाहते है,

कोई सभा मे गैरहाजिर ही रहते हे। अिस प्रकार कई तरह के लोग बच जाते है। उनसे घर-घर जाकर मिलना चाहिये। अनुभव तो यह है कि सभा के दान से दुगुना तिगुना दान बाद मे घर-घर जानेपर प्राप्त होता है। सभा में व्यापक काम होता है और घर-घर जाने से वह गहरा होता है।

गाव में दान मागने के लिये जाने के समय किसी के बारे में पूर्वगह बनाकर नही जाना चाहिये। कई कजूस माने जाने वाले दान देते है। गाववालो के द्वष मत्सर का हम हमारे ऊपर असर न होने दें। हरएक के घर प्रेम से जाना चाहिये। कार्यकर्ता को अपना मन स्थिर रखना चाहिये। काफी कटुप्रसग निराशा-जनक अनुभव आयेंगे। लोग गालियाँ भी देंगे। खास करके आजको सरकार और राजनैतिक पक्षोपर लोग काफी कटु आलोचनाएँ करते हे। हमको भी उसमें घसीटने का प्रयत्न करते हें। हम यह शाति से सहन करे। और प्रेम से हमारी बात अुनको समझावे। विनोबा जी कहते है 'जो देता है उसे अेक नमस्कार, और नही देता है उसे दो नमस्कार करो'।

गाव में दान मागने के लिए कार्यकर्ता को अकेले नही जाना चाहिय। साथ म गाव वालो को लेना चाहिये। जो कोई दान देता है उसे साथ लेकर आगे बढना चाहिये। थोडी ही देर मे गाव वाले बोलने लगते है। ज्यादह से-ज्यादा लोगो से दानपत्र मिलाने की भावना उनम निर्माण होती है। और जबतक गाव के सब लोग दान नही देते तबतक अुन्हें चैन नही मालूम होती है। दाता को कार्यकर्ता बनाने का यही मौका है। अिससे गाव में बड़ा अच्छा वातावरण पैदा होता है। जब २०।२५ दाता दान मागने के लिये गाव की

गली-गली मे घूमकर घर-घर जाते है तब बडा आनंद आता है। ऐसे दाता की टोली को टालने की कोई किम्मत नही करता है। गाव मे आदोलन-सा निर्माण होता है। आदोलन जनता के हाथ मे देने का यह एक बढ़िया तरीका है।

जिस गाव मे हम काम करते है उस गाव के काम की नोट तैयार की जाय। कौन कार्यकर्ता है, सभा मे कितने लोग आये, कितने लोगो ने दान दिया, गाव मे कितने लोगो से मिले, किसने क्या जवाब दिया, किसने ज्यादा किताबे खरीदी यह सब हम नोट में लिखे। इससे आगे के काम की योजना बनाने मे सुविधा होगी और दुबारा अुस गाव म काम करने के पहले पुराने अनुभवों का लाभ मिलेगा। घर-घर जाते वक्त साहित्य खूब बेचे, भूदान पत्र के ग्राहक बनाये।

(८) भूदान-पत्र और साहित्य प्रचार

भूदान आदोलन की सारी दारोमदार विचार परिवर्तन पर है। भूदान पत्र हमारा सर्वोत्तम साहित्य है। अुसका सर्व-प्रथम प्रचार होना चाहिये। किताबे तो पुरानी हो जाती है। अेकबार खरीदने के बाद बद करके भी रख देने का डर रहता है। लेकिन भूदान-पत्र तो हर हफ्ते जाता है, खटखटाता है। अुसमे नित्य नये विचार आते रहते है। और विविध लेखकों द्वारा भिन्न-भिन्न दृष्टि से सब पहलुओपर प्रकाश डाला जाता है। कार्यकर्ता बार-बार तो नही जा सकता। उसकी शक्ति भी सीमित होती है। लेकिन भूदान-पत्र के द्वारा हर हफ्ता पू. विनोबाजी, जयप्रकाशजी आदि बडे नेता ही मानो ग्राहक से मिलने जाते है। देशभर की महत्वपूर्ण घटनाये उसमे होती है

जिससे जनता और कार्यकर्ताओ को प्रेरणा मिलती है। पत्रद्वारा कार्यकर्ता को शिक्षा मिलती है। जनता को कार्यक्रम दिया जाता है। आदोलन को ठीक दिशा मे मोडने मे और आदोलन का सचालन करने में पत्र का बडा भारी उपयोग है।

भूदान पत्र का यह सामर्थ्य हम ख्याल मे रखकर हरएक देहात म कम-से-कम एक ग्राहक अवश्य बनाये। स्कूल, ग्राम-पचायत, कार्यकर्ता, श्रीमन्त या गरीबो से चदा इकठ्ठा करके भी भूदान-पत्र को गाव-गाव मे शुरू करना आसान है। वर्धा तहसील मे ३०० देहात है। वहा भूदान-पत्र के ५२७ ग्राहक बने। यह सब जगह हो सकता है। जिस गाव मे भूदान-पत्र नही गया उस गाव मे हमारा काम ही नही हुआ ऐसा मानना चाहिये। भूदान-पत्र को शिक्षक या कार्यकर्ता द्वारा सामूहिक रूप से गाव मे पढने का भी हम इतजाम करे। इसके साथ साहित्य भी खूब बिकना चाहिए।

(६) भूदान के साथ-साथ सपत्तिदान को भी उतना ही महत्व देना चाहिये। जितने भूदान-पत्र मिले अुतने ही सपत्तिदान पत्र मिलने चाहिये। भूदान और सपत्तिदान, दोनो दानपत्र ठीकसे भर लेना चाहिये। सपत्तिदान की रकम हमें लेनी नही है। साधनदान प्राप्त करने समय सपत्तिदान पर अुसका असर न पडे ऐसी सावधानी हम रखें।

(७) कार्यकर्ता निर्माण

हम ही क्रातिकारी है ऐसा कार्यकर्ता न समझें। देहात में काफी अच्छे कार्यकर्ता पडे है जिनकी हमको पहचान नही रहे है। हमारा काम केवल भूदान मागना, विचार प्रचार करना ही

नही है । गाव-गाव मे जो निष्क्रिय सज्जन पडे हैं अुनको जगाना और उन्हे इस काम के लिये प्रेरित करना हैं। देहात मे काफी हृदयवान लोग पडे है । हमारा काम ऐसे हृदयवान, दिल वाले आदमी की खोज करना, अुसे यह विचार समझाना, अुसके आधार पर गावमें काम खडा करना है । अुस गाव मे काम शुरू करके आगे के काम का बोझ अुसपर डालना है । ऐसे कार्यकर्ता को हम गांव मे साथ तो रखेंगे ही, लेकिन हमारे साप्ताहिक पदयात्रा मे दूसरे गाव मे भी उसे साथ ले चलगे । अुसका परिचय वढेगा । काम करने की शिक्षा उसे मिलेगी । अुसके साथ हम चर्चा करे । अुसे साहित्य पढ़ने को दे । और धीरे-धीरे समयदान देने के लिये उसे प्रेरित करे । और जहा साप्ताहिक समारोह का अन्तिम दिन का गाव होगा वहा अुसे लाकर समयदान की घोषणा अुसके मुखसे कराये ।

(८) हमारा कार्यक्रम छोटे-मोटे सुधार का या विकास का कार्यक्रम नही है । इसलिये हम हमारी शक्ति इधर-उधर छोटे-छोटे सवालो मे और कामो मे न खर्च करे । जनता को भी हम सुधार और क्रांति का भेद समझावे और इस देश का सवाल क्रातिसे ही कैसे हल होगा यह बतावे ।

ऐसा अजातशत्रु, आस्तिक, आत्मविश्वास वाला लगनशील और तज्ञ कार्यकर्ता हरअेक गाव में यशस्वी होकर ही आता है अैसा आजतक का अनुभव है ।

पैरोका सबल, वाणीका रसाल और अत:करण का निर्मल पदयात्री घूमता रहे भगवान अुसके आगे और पीछे खडा है, ऐसा विनोबाजी का सबको आशिर्वचन है ।

स्थानीय परिस्थिति तथा कार्यकर्ताओ का स्तर देखकर इसमे कई व्यावहारिक और तात्विक सूचनाये जोडी जा सकती हैं।

जो सर्व सामान्य बाते हैं वह उपर आचुकी है। देहात म अुनका काम सफल और आसान कैसे होगा इसका पूरा मार्ग-दर्शन सयोजक न करना चाहिये जिससे निकलते समय अुनम उत्साह और आत्मविश्वास पैदा हो।

★

६ इस तंत्रका क्रमशः विकास

मध्यप्रदेश म २२ जिले है। कार्य की सुविधा से अुन्हे पाच भागो मे बाटा गया है। नागपूर विभाग में चार जिले दिये गये है। इन्ही चार जिले के कार्यकर्ताओ ने अकेले-अकेले अपने-अपने तह-सील में घूमने के बजाय सामूहिक पदयात्रा निकालने का तय किया। और काजीवरम् सम्मेलनतक सब देहातो मे सदेश पहुचाने का निश्चय किया। फलस्वरुप आठ माह लगातार अखड सामूहिक पदयात्रा का सिलसिला जारी रहा और १० तहसीलो मे सामूहिक पदयात्राओ का आयोजन किया गया। इस कल्पना का धीरे-धीरे किस प्रकार विकास होता गया इसका चित्र नीचे दिया जा रहा है।

(१) अर्थ स्वावलंबी रचना

सामूहिक पदयात्रा के प्रवास-खर्च, भोजन खर्च प्रचार कार्य और समारोह आदि के लिये करीब १ हजार रुपये खर्च आता है। मध्यप्रदेश भूदान समिति ने केवल ३०० रुपय ही खर्च देने की

जिम्मेवारी ली। बचा हुआ खर्च जनतासे ही निकालने का सोचा गया। इसलिये हमने तय किया जिस गाव के लोग भोजन खर्च अेवं समारोह का खर्च करने के लिये तैयार होंगे अुसी गाव में शिविर और समारोह लेंगे। और भोजन के लिये आजतक कहीं भी हमको अेक पैसा खर्च नही करना पडा। लेकिन फिर भी शुरु-शुरु में मध्यप्रदेश भूदान समिति को पैसा देना पडा। अिन्ही दिनो निधिमुक्ति की बात जोरो से चली, और समिति के पास पैसों की कमी थी; इसलिये सब पैसा जनतासे ही लेना चाहिए ऐसा निश्चय हुआ। आवश्यकतामे से अकल सूझी। और आखिरी दिनो मे भूदान समिति पैसा दे तो भी हम अब नही लेंगे ऐसा तय हुआ। आखरी दो सामूहिक पदयात्राओं की हालत यह है कि जनतासे ही पूरा पैसा हमको मिला।

(२) राजनैतिक संस्थाओं से संबंध

शुरु-शुरु मे राजनैतिक पक्षो के बिना हमारे लिए काम करना कठिन मालूम होता था। जिस तहसील मे यह सामूहिक पदयात्रा का कार्यक्रम होता था वहां के राजनैतिक कार्यकर्ताके हो हस्ताक्षर से जनता को भूदान मे हिस्सा लेने की अपील निकालते थे। पॅम्फलेट्स् छपते थे। अुनकी चिठ्ठियाँ लेकर देहातो मे जाते थे। लेकिन जिनके दस्तखत हमारे पत्रको पर रहते थे उनमे से बहुताश भूदान के लिये बाहर नही निकलते थे। कई खुद दान तक नही देते थे। जब सप्ताह मे मिले दान का नतीजा जाहिर किया जाता था तब यह हमारे ही बदौलत हुवा, इसका बहुत सारा श्रेय हमको ही है, इसका लिखित सर्टीफिकेट हमको दो ऐसा कुछ कहते थे। पेपरो मे जाहिर करते थे और अपनी पार्टी

ऑफिस को रिपोर्ट भेजते थे कि यह सब काम हमने ही किया। इससे अन्य पार्टीवालों मे बुरी प्रतिक्रिया होती थी।

इससे भूदान कार्यकर्ताओ को बहुत अटपटासा लगता था। जनता को भी बुरा लगता था। राजनैतिक पक्षके ही कुछ सज्जन कार्यकर्ता कहने लगे की काम तो आप करते है, नाम हमारा होता है। हमारा तो जनता पर नैतिक प्रभाव नही हैं। बलिक आप भूदान कार्यकर्ताओ के प्रति जनता मे आदर बढ रहा है। ऐसी हालत में भूदान समिति और कार्यकर्ताओं को अपने नाम पर ही सब चलाना चाहिये। बात सच थी। लेकिन उनको टाल कर काम करेंगे तो रास्ते मे रुकावटे आयेंगी यह डर मन मे था। इसलिये हिम्मत नही हो रही थी। दो-तीन सप्ताह यही बात चली। धीरे-धीरे भूदान कार्यकर्ताओ की सख्या और क्षमता बढी, जनता उन्हे जानने लगी। अब जो कोई भूदान मे हिस्सा लेता है, पदयात्रा के लिये निकलता है, और भूदान के बारे म जिसके दिल में हमदर्दी है ऐसे ही नेता को शिविर या सम्मेलन म भाषण के लिये बुलाते है। हस्ताक्षर भी भूदान कार्यकर्ताओ के ही रहते है। हर एक का सहकार हम व्यक्तिगत रूप से मागते है। नतीजा यह निकला कि भूदान कार्य की इज्जत बढी है और कार्यकर्ताओ कि शक्ति भी बढी है।

३ भूदान और संपत्तिदान पर समान जोर

प्रथम जो सामूहिक पदयात्रा हुई उस वक्त सपत्तिदान का विचार कार्यकर्ताओ तक ही सीमित था। बीच मे पू जाजूजी का देहात हो गया तब कार्यकर्ताओ ने सपत्तिदान की ओर अधिक ख्याल देना

शुरु किया। कुछ दानपत्र मिलने लगे। भूदान संपत्तिदान आंदोलन यह आर्थिक समता के सिक्के के दो पहलू है, एक दूसरे बिना अधूरा है, इसलिये दोनो को समान भूमिका पर लाने का हमारे कार्यकर्ताओ ने निश्चय किया। भूदान आंदोलन को निधिमुक्त बनाने का विचार देश मे शुरु हुआ। वर्धा तहसील वाले एक सालसे यह कर रहे थे। इसलिये निश्चय के साथ कार्यकर्ता संपत्तिदान के काम में जुट गये। नतीजा यह हुआ कि जनता ने भी इस विचार का स्वागत किया और अब भूदान-संपत्तिदान के दाननपत्र लगभग बराबरी से मिलने लगे। इस संपत्तिदान से कुछ जिले अब निधिमुक्त होकर अपने पैरो पर खडे रहने की स्थिति मे आगये है।

(४) जन-आंदोलन का निर्माण—

चार जिलो के कार्यकर्ताओ को बुलाकर अेक तहसील मे टोलियां निकालकर अेक-अेक हफ्तेमे प्रचार करना तो ठीक था। लेकिन जो जमीन मिली असका बटवारा कैसे हो? बाद में वहां के आंदोलन को कौन चलाये? इसका जवाब हमारे पास नही था। सोचते थे, भूदान-समिति कोई वैतनिक कार्यकर्ता नियुक्त करके आगे के काम को चलायेगी। लेकिन इससे पूरा काम होने वाला नही है। जन-आंदोलन तो हरगिज नही होगा यह ख्याल में आया। यदि अुस तहसील के कार्यकर्ता सप्ताह मे आसकते है, तो क्या वे ५७ तक समय नही देंगे? क्या अुनमें से कोई जीवनदान नही देगा? क्यो नही आवाहन किया जाय? क्या हम विनोबाजी है या जयप्रकाशजी जैसे आदरणीय नेता है कि हमारे ऊपर विश्वास रखकर लोग इतना त्याग करने के लिये सामने आयेंगे? यह संकोच भी बारबार होता था। बादमे संकोच मिट गया।

सभा मे आवाहन करना शुरू हुआ। जवाब मिला। समय दान की घोषणाएँ होने लगी। इससे हिम्मत बढी। अब हर सप्ताह के आखरी समारोह में ऐसा आवाहन विश्वास के साथ किया जाता है और हरअेक तहसील मे कार्यकर्ता समय दे रहे है। गोंदिया के शिविर में पहले ही दिन १० कार्यकर्ता समयदान देने लगे। अुनको समझाना पडा कि सप्ताह भर काम करके निश्चय पक्का करो और फिर समयदान दो। समाप्ति के दिन वहाँ के ३० कार्यकर्ताओने समयदान दिया। किसीको तनख्वाह या ऐसा कोई प्रलोभन नही दिया गया। कई कार्यकर्ता कइ माह से हमारे साथ लगातार घूम रहे है और कुछ भी नही लेते है। घर जाते हैं तो छुट्टी लेकर जाते है और समयपर आने का ध्यान रखते है। एक ने छुट्टी मे भी भूदानपत्र प्राप्त किये। कोई अनुशासन की कारवाई अुनपर होनेका डर नही है। लेकिन क्राति की पुकार समझकर शक्तिभर काम कर रहे है।

अब जो कार्यकर्ता देहात मे भूदान-पद-यात्रा निकालने के लिये जाते है वे भूदान-सपत्तिदानपत्र तो लाने की चिंता रखते ही है लेकिन साथ-साथ समयदानी कार्यकर्ता तैयार करने का भी प्रयत्न करते है।

इन समयदानी कार्यकर्ताओ मे सब तरह के लोग हैं। रचनात्मक कार्यकर्ता, विद्यार्थी, राजनैतिक कार्यकर्ता, जवान, बूढे, और सरकारी नौकरी ठुकराने वाले लोग हैं।

नागपुर विभाग के इन कार्यकर्ताओ ने १० तहसीलो में सामूहिक पदयात्राएँ निकालकर आठ माह मे ३००० देहातो मे सदेश पहुचाया। फलस्वरूप ४००० मे ऊपर दाताओ ने १०००० अेकड से अधिक भूदान दिया। २००० से अधिक दाताओं ने सपत्तिदान

दिया। भूदानपत्र के ५०० से ऊपर ग्राहक बने। ५००० रुपयो का साहित्य वेचा। १०० से अधिक कार्यकर्ताओ ने समयदान दिया।

पूर्वतैयारी की जो आदर्श कल्पना थी अुसके मुताबिक हम सब जगह काम नही कर सके। क्योकि काजीवरम् सम्मेलन तक हर गाव मे हमे जाना ही हं ऐसा कार्यकर्ताओ का निश्चय था। इसलिये पूर्वतैयारी के लिये हर तहसील में पूरा समय नही मिला और स्थानीय लोगो के लिये समय अनुकूल न रहन पर भी लगातार पदयात्रा चलाने के लिए कई स्थानोपर पदयात्राएँ ली।

कुछ तहसीलो मे १ माह की पूर्वतैयारी करके काम हुआ। ऐसा काम प्रात के हर विभाग मे हुआ। नतीजा वहुत अच्छा आया। उदाहरण के लिये हम तीन विभागो की तीन निम्न तहसीलो को ले –

तहसील का नाम	दातासख्या	भूमिप्राप्ति (अेकड)
(१) पुसद	१६००	८५००
(२) जबलपुर	१३००	४०००
(३) आर्वी	११००	३२००

जहा जल्दी-जल्दी ८–१० दिन की पूर्वतैयारी करके काम किया गया और भूमिप्राप्ति के बजाय गांव-गाव सदेश पहुचाने का उद्देश्य प्रमुख माना गया वहा का नतीजा भी आशाप्रद रहा। नागपुर विभाग के ९ तहसीलो मे ऐसा काम हुआ और कही भी ५०० अेकड से कम जमीन नही मिली। अिसलिये अधिक पूर्व-तैयारी करे तो अधिक फल मिलता है, लेकिन साधारण पूर्वतैयारी से भी सामूहिक पदयात्रा के तत्र से आशादायक ही नतीजा आता हं। प्राप्ति के साथ-साथ वितरण और सामूहिक पदयात्राओ में

भूमिपुत्रो का सहकार लेने का सफल प्रयास कुछ जगह किया गया। इसको आमरूप देनेका प्रयत्न चल रहा है।

मध्यप्रदेश में प्रथम प्रातभर के सब कार्यकर्ताओ की शक्ति लगाकर केवल ९ टोलिया निकली थी। अब मध्यप्रदेश मे कम-से-कम अेकही समयपर २०० टोलिया निकल सकती है।

६. सामूहिक पदयात्राओं का उपयोग

मध्यप्रदेश मे जहा के कार्यकर्ता एक जगह आकर साथ-साथ काम करते गये वहा-वहा सामूहिक पदयात्राये चली। जहा की पूर्वतैयारी ठीक थी वहा नतीजे अच्छ निकले और जहा के कार्यकर्ताओ ने पूर्वतयारी को गौण समझा वे असफल रहे।

इसलिये सामूहिक पदयात्रा ठीक से सगठित करने के लिये दो बाते जरूरी है :—

(१) प्रात का चार या पाच जिलो के विभाग अलग-अलग बनाकर वहा के कार्यकर्ताओ का साथ-साथ काम करना।

(२) पूर्वतैयारी का और पदयात्रा के तत्र का ठीक से इस्तेमाल करने के लिये इस तत्र का ज्ञान और अनुभव सघटको को प्राप्त करके खुद को शिक्षित करना।

सामूहिक पदयात्रा कार्यक्रम लगातार एक समान ही चलता रहना जरूरी नही है। लेकिन प्रारम्भ में जनता में इस विचार का

व्यापक प्रचार करने के लिये, काम को बढावा देने के लिये और नये कार्यकर्ता प्राप्त करने के लिये इसकी निहायत जरूरत है। प्रथम कदम के बतौर यह एक अच्छा तरीका है।

'सघ शरण गच्छामि' यह मन हमे अमल मे लाना है। एक बार तहसील में इसका प्रयोग हो जाने के बाद चार-पाच जिलो के कार्यकर्ता को बार-बार वहा आने की जरूरत नही है। नये कार्यकर्ता तैयार हो जाने के बाद एकेक जिले के कार्यकर्ता भी इस तरह की पदयात्राएँ निकाल सकते है। बाद मे वितरण केलिये कार्यकर्ता सामूहिक रूपमे या अकले-अकेले भी निकल सकते है। एक बार कार्यकर्ता का आत्मविश्वास और शक्ति बढने पर और जनता का सहयोग मिलने पर तो फिर गाव-गाव मे स्वतत्र रूपसे काम चलेगा। लेकिन काम को गति देने के लिये पहले धक्के के बतौर सामूहिक पदयात्रा एक अच्छा तरीका है।

७ 'एक दिनमें क्रांति' की पूर्व तैयारी

हमने अभीतक देखा कि भारत के एक प्रान्त मे यह मुख्यतया चला है। अब सारे भारत मे इस प्रकार से काम करने की योजना बन रही है।

हमने १९५२ मे सेवापूरी मे तय किया था कि ५ लाख गावो मे २५ लाख एकड जमीन प्राप्त हो। २५ लाख एकड जमीन तो मिली, उससे भी अधिक मिली, लेकिन ५ लाख गावो से हम भूमिदान न ला सके। क्योकि हम ५ लाख गावो म

पहुच ही नही पाए। यानी भारत के सब गावो म हम एकबार भी अभी नही पहुचे है। और हमे १९५७ मे क्राति का पहिला कदम पूर्ण करना है, ऐसा हम मानते है। यह कैसे होगा ? अतः एक बार गाव-गाव जाकर सदेश पहुचाना निहायत जरूरी है।

सदेश पहुचाने का काम कार्यकर्ता व्यक्तिगत रूपसे अकेले भी कर सकते है। वह भी अभीतक नही हुआ है। मुश्किल से ५ लाख गावो मे से २ लाख गावो मे हम पहुच पाए है। वह क्यो नही हुआ है ? क्योकि कार्यकर्ता निराश हो गए है। केवल घूमने स क्या लाभ यह भी उन्हे लगता है। इसलिए घूमने के साथ-साथ यदि जमीन मिले, जनतापर एव अन्य कार्यकर्ताओ पर भूदान कार्य का प्रभाव पड सके ऐसा तरीका खोजना चाहिए। सौभाग्य से ऐसा तरीका सामूहिक पदयात्रा के रूप में सामने आया है। इससे केवल गाव-गाव सदेश ही नही पहुचाया जाता है, बल्कि जमीन भी मिलती है, और ऊपर बताए हुए अन्य नतीजे भी सामने आते है। यदि हम इस प्रभावकारी तरीके का प्रयोग भारतभर करते है तो क्या होगा ?

कल्पना ही करनी हो तो कल्पना पूरी करनी चाहिय। मध्य-प्रदेश म मामूली पूर्वतैयारी से हर तहसील म १००० एकड़ औसत जमीन मिली है। उस हिसाब से भारतभर मे १५ लाख एकर सामान्य कार्यकर्ताओ द्वारा भूमिप्राप्ति सकती है। विनोबाजी, जयप्रकाशजी, बाबा राघवदासजी, रविशकर महाराज आदिके द्वारा मिलने वाली जमीन तो अलग ही है। सपत्तिदान पत्रो का आजका कुछ हजारो का आकडा लाखो में जायगा। आजके कार्यकर्ताओ म कम-से-कम तिगुनी वृद्धि होगी। सब कार्यकर्ताओ को तात्विक एव व्यावहारिक भूदानयज्ञ की शिक्षा का बढिया मौका मिलेगा।

और गाव-गाव तो सदेश फैलेगा ही। आज डेढ हजार कार्य-कर्ता काम कर रहे हैं। इनमें से ३०० कार्यकर्ताओ को ऑफिस काम के लिए एवं सगठन के लिए रखा जाय तो भी १२०० कार्यकर्ता मिलते हैं। आरभ में ही इतनी सख्या है। यह सख्या प्रति सप्ताह सामूहिक पदयात्रा के तत्र के कारण वढेगी। यानी १२०० टोलिया तो फौरन निकाली जा सकती हैं। इन १२०० व्यक्तिओ को इस तत्र मे प्रशिक्षित करने का काम अेक माह के भीतर ५, ६, ट्रेनिंग कॅम्पस लेकर पूरा किया जा सकता है। या प्रथम हर प्रात के २-३ कार्यकर्ताओ को लेकर ५०-६० व्यक्तियो का एक ट्रेनिंग कॅप चले। वाद मे ये भाई अपने-अपने प्रात के कार्यकर्ताओ को इसमे शिक्षित कर सकते हैं।

यदि माह मे २ यदयात्राएँ निकाली जाय और वचा हुआ समय पूर्वतैयारी एव अन्य कामो मे दिया जाय तोभी सालभर मे २४ पदयात्राएँ निकल सकती हैं। एक सप्ताह मे १२ छोटे-मोटे गावो म हम जा सकते हैं। इस प्रकार १२००×२४×१२ यानी करीव-करीब ३॥ लाख गावो में हम जा सकते हैं। उत्तरोत्तर इन टोलियो की सख्या वढनी जावेगी। अत हम १ साल के भीतर पाच लाख गावो में पहुच सकते हैं।

ऐसा करने से हर गाव मे भूदानयज्ञ का सदेश पहुचेगा, साहित्य जावेगा, भूदानप्रत्र के ग्राहक बनेगे, वहुताश गावो में से भूदान मिलेगा, सपत्तिदान मिलेगा, हर तहसील में कार्यकर्ताओ का निर्माण होगा, कार्यकर्ता प्रशिक्षित होगे, और अनेक कार्यकर्ताओ को पूरा, एव प्रभावकारी काम मिलेगा। साथ मे काम करने से कार्यकर्ताओ का भाईचारा वढगा, गलतफहमिया दूर होगी, मनमुटाव हटेगा। इसके गणसेवकत्व निर्माण होगा। केवल इतना ही लाभ

होता तो भी वह कम नहीं था। अलावा इसके गांव-गांव के लोगों को हम १९५७ की क्रांति का, जमीन बांटने की प्रक्रिया का ज्ञान दे सकेंगे। गांव गांव सेवक मिल सकेंगे। इसीमें से 'एक दिन में क्रांति' का विनोबा का सपना मूर्तरूप में ला सकता हूं।

—★★—

परिशिष्ठ नं. १

तहसील भूदान सप्ताह

देश की नैतिकता, सहृदयता और सद्भावना बढ़ाने, जमीन और सम्पत्ति का वितरण करके समानता कायम करने एवं इस प्रकार के सहकार्य की नींव पर काम करने वाले को अन्न तथा खाने वाले को काम देने के लिये एक नया सर्वोदय समाज निर्माण करने के हेतु भूदान यज्ञ आन्दोलन ५ साल से हमारे देश में पूज्य विनोबाद्वारा चल रहा है। इस आन्दोलन में अभी तक ४४ लाख एकड़ जमीन भूमिहीन भूमि मजदूरों को वितरण करने के लिये प्राप्त हुई है। ११०० ग्रामवासियों ने अपने गांव की पूरी जमीन इस यज्ञ में अर्पण कर दी। अभी तक प्राप्त लाखों एकड़ जमीन का वितरण देश भर में हो रहा है।

भूमिदान आन्दोलन के साथ ही सम्पत्तिदान आन्दोलन को भी गति प्राप्त हुई है और इस प्रकार बुद्धिदान, जीवनदान, श्रमदान, समयदान, साधनदान एव ग्रामदान इत्यादि आन्दोलन भी शुरु हुये हैं। अहिंसा और शान्ति द्वारा जिस तरह से हमने स्वराज्य प्राप्त किया उसी प्रकार हम आर्थिक व सामाजिक समता इसी मार्ग द्वारा प्राप्त कर सकते हैं, इस प्रकार का आत्म विश्वास इन आन्दोलनों के शुरु होने के पश्चात लोगों मे बढ़ रहा है। इन आन्दोलनों को सभी राजकीय पक्षों का समर्थन प्राप्त हुआ है। कांग्रेस के अध्यक्ष श्री ढेबरभाई ने समस्त कांग्रेस कमेटियों को भूदान-कार्य करने के लिये आदेश भी दिया

है । श्री जयप्रकाश जी ने तो इस कार्य के लिये अपना जीवनदान दिया है । अब इसकी पूर्ति की जिम्मेदारी जनता की हैं ।

हर तरह के अपने मतभेदो को अलग रख कर हम इस आन्दोलन को सन ५७ तक यशस्वी बनाने के लिये जिम्मेवारी के साथ इस काम मे लग जाय ।

गोंदिया तहसील में अभी तक १००० एकड जमीन प्राप्त हुई है, जिसमे से ६०० एकड़ जमीन का वितरण हो चुका है । भूमिहीन भूमि मजदूरो की सख्या को देखते हुये यह जमीन बहुत कम है । अन्य तहसीलो मे सामूहिक पदयात्रा में काफी जमीन प्राप्त हुई है । इस प्रकार की पदयात्रा हमारी गोंदिया तहसील मे ता. २६ फरवरी से लेकर ४ मार्च तक भूदान समिति ने आयोजित की है ।

पदयात्रा के प्रारम्भ के पहले ता० २४ तथा २५ फरवरी को कार्यकर्ताओ का शिविर गोंदिया में होगा । इसके पश्चात ३५ से ४० टोलिया सम्पूर्ण तहसील के प्रत्येक गाव मे जाकर इस आन्दोलन का प्रचार करेगी एव अधिक-से-अधिक भूदान, सम्पत्तिदान, साधनदान इत्यादि प्राप्त करेगी । इस शिविर का समारोह ता० ४ मार्च को तिरोडा में होगा । शिविर के उद्घाटन एव समारोह के लिये बाहर से नेताओ को बुलाने का आयोजन किया जा रहा है ।

गोंदिया तहसोल के सभी भाईयो से विनती है कि हमारे देश की आर्थिक व सामाजिक विपमता दूर करने के लिये सन्त विनोबाजी ने जो यह आन्दोलन शुरु किया है इसमें अपना हिस्सा

सन्त विनोबा जी का कहना है कि सम्पन्न काश्तकारों को अपने निर्वाह के लिए जरूरी जमीन रखकर बाकी की दान कर देना चाहिये। मध्यम श्रेणी के काश्तकारों ने अपना छटवा हिस्सा देना चाहिये। एवं गरीब काश्तकारों को भी नैवेद्य समझ कर कुछ हिस्सा देना चाहिये। जिन भाईयों के पास जमीन नही हैं वे सम्पत्तिदान दें।

भवदीय

संयोजक, भूदान समिति

★

परिशिष्ठ नं. २

भूमिदान तथा संपत्तिदान के सम्बन्ध में नेताओं के अभिप्राय

राष्ट्रपिता महात्मा गांधीः—

मीराबेन ने बापूजी से फिर पूछा कि स्वराज्य प्राप्ति के बाद जमीन की व्यवस्था कैसी रहेगी ? बापूजी ने कहा "जमीन सरकार की होगी। मै यही मानकर चलता हूं कि राज्यसत्ता उन्हीं लोगों के हाथ में होगी जो इस आदर्श पर विश्वास रखते हों। बहुत सारे जमीदार अपनी खुशी से जमीन छोड़ देंगे। जो नहीं देंगे उनके लिये कानून बनेगा।"

भूदान यज्ञ के प्रवर्तक सन्त विनोबाः—

मेरे भारतवासी भाइयो, आपसे मेरा अनुरोध है कि आप इस प्रजासूय-यज्ञ मे अपना हिस्सा अर्पण करे और इस काम को सफल करके आर्थिक क्षेत्र मे अहिंसा की प्रतिष्ठापना करे। हमारा विचार समझे बगैर यदि कोई हमे जमीन देगा तो हमे दुःख होगा। किसी भी ढग से जमीन इकट्ठा करना यह हमारा हेतु नही है। हमे सर्वोदय की वृत्ति का निर्माण करना है। आज हिंदुस्थान म सर्वोदय समाज नही है। सग्रह बढाने का पागलपन लोगो पर सवार है। इतनी सग्रहनिष्ठा होने पर भी लोग कितना सग्रह कर पाये है? आज के सग्रही समाज में हर आदमी पीछे ढाई छटाक दूध आता है। मेरे असग्रही समाज मे हर आदमी के लिये एक सेर दूध रहेगा। अनाज इतना रहेगा कि उसकी कीमत ही न रहेगी। अनाज की कीमत ही क्या? कोई भूखा है तो लोग उसे खाना खिलायेगे लेकिन अनाज कोई बेचेगा नही। डाल्डा खाने वाले को अच्छा घी खाने को मिलेगा, क्योकि समाज मे घी खूब रहेगा। तरकारी भरपूर रहेगी। इसलिये गाव का एक कुटुम्ब बनाओ तो लक्ष्मी बढेगी। इसलिये सब मुझे दान दे यह मेरी इच्छा है।

भूदान यज्ञ के लिये जीवनदान देनेवाले श्री जयप्रकाशनारायणः—

यह सारा महान एव उदात्त कार्य हम पुकार रहा है। हमारी निष्ठा एव पुरुषार्थ के लिये इससे अच्छे मौके की मैं कल्पना भी नही कर सकता। हम करोडो है। इन करोडो लोगो म मे क्या कुछ हजार भी स्त्री-पुरुष ऐसे नही निकलेगें जो इतने त्यागी, इतने साहसी, इतनी दूर दृष्टि वाले हो, जो इस ऐतिहा-

सिक आन्दोलन में खुद को समर्पण करेंगे ? इस सवाल के जवाब पर दुनिया का भविष्य कम-से-कम भारत का भविष्य अवलंबित है।

अंग्रेजी राज्य में स्फूर्तिशाली नौजवान सरकारी नौकरियों म जाने से इंकार करते थे। जिन लोगों के मन में राजनैतिक महत्वाकांक्षाएं है वे समझ ले कि विधान सभा या सरकार भी राष्ट्र निर्माण का काम नही कर सकती। नौजवान अपना-अपना हृदय टटोलें। क्या वे आराम की जिन्दगी पसन्द करते हैं ? क्या वे राजनैतिक, सामाजिक प्रतियोगिता में शामिल होना चाहते है ? जो ऐसी प्रतियोगिता में हिस्सा लेते हैं; वे आखिर जनता पर ही सवार होते है। मुझे पूरी आशा है कि इस देश में बहुत-से ऐसे युवक युवतियां है जो एक महान ध्येय के लिये कष्टमय एवं संकटमय जीवन का आलिगन करने को तैयार है। यह शांत बैठने का समय नही है। मुहूर्त टल रहा है, कल बहुत देर हो सकती है।

राष्ट्रपति बाबू राजेन्द्र प्रसादः——

हम इस बात को हमेशा ख्याल मे रखे कि देश में जो कुछ होता है उसके तरफ महात्मा जी की आत्मा ऊपरसे देख रही है। अुनके अधूरे रहे काम को विनोबा जी आगे बढ़ा रहे है।......
.... भूमिहीन गरीबों के लिये लोग विनोबा जी के भूमिदान यज्ञ में जमीन देकर उस महान कार्य मे सक्रीय निष्ठा बतावे ऐसी मेरी सब लोगों से विनय है।

प्रधान मंत्री पंडित जवाहरलाल नेहरूः—

आचार्य विनोबा ने यह अेक असामान्य आन्दोलन शुरू किया है। याद रहे कि यह आन्दोलन अेक क्रांतिकारी आन्दोलन

है। मैं भूदान आन्दोलन को अधिक-से-अधिक महत्व देता हूं। इस काम में हर अेक आदमी और दल को बिना किसी झगड़े या किसी दल या पार्टी के लिये उससे फायदा उठाने की इच्छा के सहयोग की भावना से मदद देनी चाहिये। यह किसी एक दल का आंदोलन नहीं है और सभी लोगों को, चाहे उनका किसी भी दलसे संबंध क्यों न हो, इसमें हिस्सा लेना चाहिये।

★

परिशिष्ठ नं. ३

भूदान यज्ञ में मिली जमीन का बंटवारा कैसे ?

सबै भूमि गोपाल की
सब संपत्ति रघुपति कै आहि

जमीन किसको मिलेगी—

१. भूदान में मिली जमीन मजदूरों को बिना पैसा लिये बांटते हैं। भूदान यज्ञ में जिस गांव की जमीन मिली हो बने जहां तक उसी गाव वाले भूमिहीन मजदूरों को देते हैं। अगर उस गांव का कोई योग्य व्यक्ति न मिले अथवा पड़ोस के गांव वाले को सुविधा हो तो उनको दी जाती है।

२. जमीन खेती के लिये ऐसे भूमिहीनों को देते हैं जिनके पास दूसरा कोई धंदा व्यापार नहीं है। जो जमीन की काश्त स्वयं करता है या जिसको मेहनत करने की इच्छा है।

३. प्राप्त जमीन का कम-से-कम ½ हिस्सा हरिजन या आदिवासी को बांटते हैं।

जमीन का बंटवारा कैसे ?

१. जिस गांव में वितरण करना हो उस गांव में कुछ रोज पहले और वितरण के दिन लोगों को डुग्गी द्वारा वितरण की सूचना दी जाती है।

२. भूमि-वितरण गाव वालो की सार्वजनिक सभा में होता है।

३. भूमिहीनों के अर्ज मुफ्त लिये जाते हैं। सभा मे भी अर्ज लिये जाते हैं।

४. भूमि वितरण सर्व संमती से करने की कोशीश की जाती है। मतभेद की सुरत में चिठ्ठी डालकर निर्णय होता है।

कितनी जमीन

अेक परिवार को अधिक-से-अधिक––

(१) तरी जमीन ३ अेकड़ तक

(२) खुश्की जमीन––

(अ) चावल क्षेत्र— ७ अेकड तक

(आ) कपास, ज्वार, गेहू क्षेत्र (मैदानी) १० अेकड़ तक

„ „ „ „ (पठार) १५ अेकड़

(ई) विल्कूल हलकी जमीन (पथरीली भारामेरी वरली ढालू) २० अेकड़ तक

भूदान में मिली जमीन--

(१) भूमिदान की जमीन जिसे मिली है उस भूमिधारी का हक उसकी मृत्यु के बाद उसके वारिसों को मिलेगा।

(२) वह जमीन बेच नही सकेगा या अपना हक हस्तांतर नही कर सकेगा।

(३) वह दुसरे किसी को ठेके से या अन्य तरह से जमीन नही दे सकेगा।

(४) वह दो वर्ष से अधिक समयतक जमीन पडती नही रखेगा।

(५) वह लगान समयपर देगा।

(जमीन बाटने का यह प्रमाण मध्यप्रदेश का है। अन्य प्रदेशो मे जमीन को देखकर कम-जादा हो सकता है।)

★

परिशिष्ठ नं. ४

गरीबों भूमिक्रांति के सैनिक बनो.

बडे जमीनदार और राजा महाराजाओ से भूदान में जमीन मांगना ठीक है। लेकिन गरीब किसानोसे दान लेकर उन्हे अधिक गरीब क्यो बनाते हो ?

विनोबाजी का जवाब

अुनसे तो मै जमीन लेऊंगा ही। लेकिन हम सबसे जमीन मागते है, अिसका मतलब यह नही है कि हम सबसे समान जमीन

मागते है । जो मध्यम श्रेणी के किसान है, अुनसे हम छठा हिस्सा माँगते है । जो बडे बडे काश्तकार और जमीदार है अुनसे तो हम कहते है कि आप अपने लिये थोडा-सा रख कर बाकी सारा दान दे दो । और जो बिलकुल गरीब है अुनसे तो हम प्रसाद के रुप मे वे जो भी दे ग्रहण कर लेते है । हम जो गरीब से जमीन लेते है उसके चार कारण है ।

अधिक गरीब के लिये त्याग

(१) आज समाज मे सब से दुखी बेजमीन लोग है । अुन की तुलना मे गरीब किसान भी सुखी है । अिसलिये आज समाज में जो सबसे ज्यादह दुखी है अुसके लिये हर अेक को थोडा थोडा त्याग करना चाहिये । मेरे लिये पर्याप्त रोटी मेरे पास नही है, तो अगर कोअी भूखा मेरे पास आजाय, तो मेरे पास जो भी कुछ है, अुसमे से अेक हिस्सा अुस को देना मेरा कर्तव्य है । यह अेक धर्म है । हम यही भावना समाज मे लाना चाहते है ।

आसक्ति का निराकरण

(२) आखिर हम सिखाना चाहते है कि जमीन पर किसी की मालिकी ही नही रहनी चाहिये । आज जैसे श्रीमान् अपने को अपनी जमीन का मालिक समझता है, वैसे गरीब भी अुसकी थोडी सी जमीन का अपने को मालिक समझता है । दोनो खुदको जमीन का मालिक मानते है । हम दोनो को अिस मालिकी की भावना से मुक्त करना चाहते है । जैसे प्यासे को पानी पिलाना अपना कर्तव्य है, वैसे ही जो जमीन मागता है, अुसे जमीन देना भी अपना कर्तव्य है क्योंकि जमीन परमेश्वर की है ।

नैतिक शक्ति निर्माण

(३) हम श्रीमानों से जमीन मांगें तो अुसके लिये हमारा अुन पर असर भी होना चाहिये। लेकिन असर कैसे होगा? हमारे पास क्या शक्ति है? क्या हमारे पास पिस्तौल है? पर हमारे पास न तो पिस्तौल है और न पिस्तौल की ताकत पर हमारा विश्वास ही है। अिसलिये हम नैतिक शक्ति निर्माण करना चाहते हैं। जब हजारो गरीब दान देंगे तब नैतिक शक्ति पैदा होगी और अुसका असर श्रीमानों पर होगा और अैसा हो भी रहा है। पहले श्रीमान लोग हमें टालते थे। परंतु अब हजारीबाग जिले में (बिहार) अुन लोगों ने मुझे कितनी जमीन दी? अुन्होंने अब जमीन क्यों दी? अिसीलिये कि जब दो सालतक गरीब लोगोंने हम पर दान की वर्षा की।

सत्याग्रही सेना

(४) मैंने कअी बार कहा है कि हम तो हमारी सेना तैयार कर रहे हैं। ऊंच-नीचवाला भेद हमें खतम करना है और ऐसी सेना बनानी है, जिसके आधार पर हम लड़ाई लड़ सकते हैं। जिन्होंने दान दिया होगा, या त्याग किया होगा, और जिन्होंने हमारे काम के साथ सहानुभूति बताई होगी, वे ही हमारे सैनिक बनेंगे। आगे कभी अगर श्रीमानों के दिल न खुले, तो हम अेक कदम और भी आगे बढ़ेंगे। और मजा ऐसी की श्रीमान भी इसी भी सेना के सैनिक बनेंगे।

मेरा विश्वास है कि मेरी सेना ऐसी जबरदस्त साबित होगी कि उसे लड़ना ही नहीं पड़ेगा। "हुंकारेणैव धनुषः।" तीर छोड़ने की भी जरूरत नहीं है। वैसे ही हमारे सेना के हुंकार से

ही काम हो जायेगा। जब लाखो गरीब लोग दान देंगे, तो बिना लडाई लडे काम हो जायेगा। भगवान् को जब गोवर्धन खडा करना था, तो उसने सब से कहा कि अपनी अपनी लाठी उसके नीचे लगाओ। यह एक जनशक्ति निर्माण करने की बात है, इसलिये हम गरीबो से दान लेते हैं।

★

परिशिष्ठ नं ५

शिबिरका पाठ्यक्रम

(१) भूदान आदोलन की अनिवार्यता और देश के अन्य कार्यक्रमो से इस की विशेषता (क्रानि और सुधार मे क्या फरक है)

(२) भूदान आदोलन का इतिहास, आदोलन की व्यावहारिक जानकारी

(३) कानून और क्राति कानून से क्राति क्यो नही होती?

(४) सर्वोदय समाज का चित्र-भूदान यज्ञ असका प्रथम कदम (भूदान बाबत व्यावहारिक जानकारी)

(५) सपत्तिदान, साधनदान, श्रमदान

(६) ग्रामदान

(७) भूदान यज्ञ की लोक नीति-पक्षनिरपेक्षता

(८) शासन निरपेक्ष समाज

(९) भूदान अेव विश्वशाति

(१०) शका समाधान

(११) १९५७ तक समयदान, जीवनदान

(१२) पदयात्रा बाबत व्यावहारिक सूचनाएँ

★

परिशिष्ठ न. ६

कार्यकर्ता गांव में क्या करे ?

(१) हर गाव मे आम सभा करनी चाहिये। सभा के लिये खुद डुग्गी देकर लोगो को निमत्रण दे। सभा के पूर्व ही दो चार भाइओ से मिलकर उन्हे सभा मे दान देने के लिये प्रवृत्त करे। सभा मे दान मागना चाहिये।

(२) केवल विचार प्रचार पर सतोष नही मानना चाहिये। भूदान सपत्तिदान पत्र मिलने ही चाहिये। ऐसे दान-पत्र मिलना ही अच्छे विचार प्रचार का परिणाम हो सकता है।

(३) भूदान पत्र का ग्राहक हरएक गांव मे हो ऐसा पूरा प्रयत्न करे। साथ साथ साहित्य विक्री करे।

(४) सभा के वाद गांव में घर घर जाकर दान मागना चाहिये।

(५) गाव के कार्यकर्ता और दाताओ को गाव मे घुमते समय साथ लेना चाहिये। उन्हे अगले पडाव पर भी साथ लेने की कोशिश करे। जनता को सप्ताह के समारोह के लिये निमंत्रित किया जाय। दान के साथ-साथ पूरा एव आशिक समय देने वाले कार्यकर्ता तैयार करना चाहिए।

(६) गाव में जिनसे मिले उनके वावत और गाव में भूमिहीन कितने है और जो काम गाव मे सभा में हुवा उस वावत नोट बुक में अहवाल लिखना चाहिये।

(७) गाव में साहित्य या भूदान पत्र का सामूहिक वाचन हो ऐसा इंतजाम करने की कोशिश करे।

★

परिशिष्ठ नं. ७

भूदान यज्ञ समिति

श्री. ____________________

भूदान यज्ञ में आपने गांव ____________________

मौ. नं. __________ तहसिल __________ जिला __________

को __________ अेकड जमीन दान दी इसके लिये भूदान समिति आपकी आभारी है । यह जमीन बांटते समय तक उसकी जोत करना; लगान देना आदि जिम्मेवारी ट्रस्टी के नाते आप पर ही है । ~~जमीन बांटी नही जाती तब तक खेती में से जो उपज होगी वह आप रख सकते है~~ ।

आपका

संयोजक

परिशिष्ठ नं. ८

सामूहिक पदयात्रा का विवरण

सर्कल का नाम १	कितने गांव २	कितने गांवों में पदयात्रा की ३	कितने गांवों से भूदान प्राप्त हुआ ४

भूदान संख्या ५	अेकड ६	सपत्तिदाता ७	सालाना रकम ८	भूदान पत्र ग्राहक ९

साहित्य विक्री १०	कितने मिल पदयात्रा ११	सप्ताह मे घुमने-वाले कार्यकर्ताओकी संख्या १२	टोली-नायक के हस्ताक्षर १३

टोली में सप्ताह में घुमने वाले कार्यकर्ताओं का नाम और पता :-

(१)
(२)
(३)